International Journal of Pedagogy, Health and Management research

Volume 2 Issue 1
June. 2026

e - ISSN - 3107-8389

Page No. 59 - 65

DOI 10.5281/zenodo.21266477

शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास: एक समीक्षात्मक अध्ययन

Author-
त्रिपुरापुरी शरण

Affiliation -
शोधार्थी, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश

Co-Author-
डॉ. रश्मि त्रिवेदी

Affiliation -
एसोसिएट प्रोफेसर, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्य प्रदेश

Contact No.- +917250660255
Email Address-
ritika0046@gmail.com

Received on 10/05/2026
Accepted on 15/06/2026
Published on 30/06/2026

मुख्य शब्द: शिक्षक, शिक्षा, व्यावसायिकता, व्यावसायिक विकास।

सारांश

शिक्षक शिक्षा से संबंधित किसी भी कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि युवा पीढ़ी किसी भी देश का भविष्य होती है। कक्षा में राष्ट्र की दिशा और दशा का निर्माण होता है तथा शिक्षक ही उसके वास्तविक निर्माता होते हैं। अतः विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण एवं मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करना शिक्षकों का प्रमुख दायित्व है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शिक्षक के उचित व्यावसायिक विकास की आवश्यकता होती है। व्यावसायिक विकास वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षक अपने ज्ञान, कौशल एवं शिक्षण क्षमता में निरंतर सुधार करते हैं तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाते हैं।

शिक्षकों के लिए अनेक सेवा-पूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध हैं, जैसे डी.एल.एड., बी.एड. ,एम.एड., सेमिनार, कार्यशालाएँ, सम्मेलन

ये सभी कार्यक्रम शिक्षकों को अपने शिक्षण कार्य को अधिक प्रभावी बनाने में सहायता करते हैं तथा विद्यार्थियों से अपेक्षित शैक्षिक उपलब्धियाँ प्राप्त करने में सहयोग करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान के साथ नए ज्ञान का समन्वय स्थापित कर सकते हैं।

व्यावसायिकता और व्यावसायिक विकास एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित अवधारणाएँ हैं। वर्तमान समय में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की तीव्र प्रगति ने प्रत्येक व्यवसाय को प्रभावित किया है। शिक्षण व्यवसाय भी इससे अछूता नहीं है। आज शिक्षक से विद्यार्थियों, अभिभावकों तथा समाज की अपेक्षाएँ पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ गई हैं। इसलिए प्रभावी कौशल, अद्यतन ज्ञान एवं सतत् व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है।

प्रस्तुत शोधपत्र में शिक्षक प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकास की आवश्यकता, महत्व तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की गई है।

1. शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास

शिक्षण एक महान व्यवसाय है, जो अनेक कारणों से अन्य व्यवसायों से भिन्न है। शिक्षक मानव विकास की प्रक्रिया में संलग्न सबसे बड़ा पेशेवर समूह है, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करता है। किसी भी व्यवसाय में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण आवश्यक माना जाता है। अतः शिक्षकों के कार्यों में सुधार एवं दक्षता के लिए प्रभावी व्यावसायिक प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है।

एक शिक्षक के व्यावसायिक प्रशिक्षण में विषय का गहन ज्ञान, शिक्षा-शास्त्र की समझ तथा प्रभावी शिक्षण विधियों का समावेश होता है। व्यावसायिक विकास के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण अलग-अलग हो सकता है। कुछ शिक्षक निरंतर सीखने एवं अपने ज्ञान को अद्यतन रखने के लिए सक्रिय रहते हैं, जबकि कुछ शिक्षक ऐसी गतिविधियों में भाग लेने से बचते हैं।

रॉड्रिग्ज एवं मैके के अनुसार, अनुभवी शिक्षकों को व्यावसायिक विकास के लिए संस्थागत सहयोग नए शिक्षकों की तुलना में कम प्राप्त होता है, जिससे उनके व्यावसायिक विकास के प्रति दृष्टिकोण प्रभावित हो सकता है।

वर्तमान समय में तीव्र आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन शिक्षा सहित प्रत्येक सार्वजनिक क्षेत्र को प्रभावित कर रहे हैं। विश्वभर की शिक्षा प्रणालियों में व्यापक परिवर्तन एवं नवाचार देखने को मिल रहे हैं।

गुस्की (2002) के अनुसार–

"शिक्षा में सुधार के लगभग प्रत्येक आधुनिक प्रस्ताव का केंद्रीय घटक उच्च गुणवत्ता वाला व्यावसायिक विकास है।"

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने व्यावसायिक विकास की अवधारणा को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। आज के विद्यार्थी अधिक जागरूक एवं तकनीकी रूप से सक्षम हैं। इंटरनेट के माध्यम से वे किसी भी विषय की जानकारी आसानी से प्राप्त कर लेते हैं, जिससे शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि उसे मार्गदर्शक एवं प्रेरक की भूमिका निभानी पड़ती है।

डे (1999) के अनुसार–

शिक्षक का विकास उसके व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन के साथ-साथ उस विद्यालय एवं समुदाय से भी जुड़ा होता है जहाँ वह कार्य करता है।

व्यावसायिकता

व्यावसायिकता का अर्थ किसी व्यवसाय को उच्च नैतिक मूल्यों, दक्षता एवं उत्तरदायित्व के साथ संपादित करना है। जिस व्यक्ति के पास आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं सकारात्मक दृष्टिकोण होता है तथा वह उनका प्रभावी उपयोग करता है, वही वास्तविक अर्थों में पेशेवर कहलाता है।

व्यावसायिकता केवल ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें निम्न गुण भी सम्मिलित होते हैं–

- समर्पण
- ईमानदारी
- उत्तरदायित्व
- अनुशासन
- समयपालन
- प्रभावी व्यवहार
- कार्य के प्रति निष्ठा

अतः व्यावसायिकता व्यक्ति के कार्य करने के तरीके, व्यवहार, भाषा, व्यक्तित्व एवं कार्य संस्कृति का समग्र स्वरूप है।

शिक्षकों के लिए व्यावसायिकता का विकास

शिक्षक की भूमिका शिक्षा की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। शिक्षक की व्यावसायिकता विद्यार्थियों के अधिगम, विद्यालय के वातावरण तथा समाज के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है।

शिक्षक व्यावसायिकता के तीन प्रमुख आयाम हैं–

1. क्षमता (Competence)
2. प्रदर्शन (Performance)
3. आचरण (Conduct)

इन तीनों के संतुलित विकास से शिक्षण की प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।

योग्यता के अंतर्गत मुख्य रूप से तीन बातें आती हैं–

- उचित प्रशिक्षण
- विषय का गहन ज्ञान

- प्रभावी शिक्षा-शास्त्र

उचित प्रशिक्षण शिक्षक को विभिन्न प्रकार की कक्षा-स्थितियों का सामना करने के लिए तैयार करता है। भाषा, संस्कृति, सामाजिक एवं आर्थिक विविधताओं के बीच भी शिक्षक प्रभावी ढंग से शिक्षण कार्य कर सकता है।

विषय का गहन ज्ञान शिक्षक को आत्मविश्वास प्रदान करता है तथा वह विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण सामग्री एवं शिक्षण तकनीकों का चयन कर सकता है।

एक पेशेवर शिक्षक निरंतर नई शिक्षण विधियों का अध्ययन करता है तथा अपने अनुभवों के आधार पर सर्वोत्तम शिक्षण पद्धति अपनाने का प्रयास करता है।

आचरण भी व्यावसायिकता का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षक का व्यवहार, व्यक्तित्व, भाषा, अनुशासन एवं नैतिकता विद्यार्थियों तथा समाज के लिए प्रेरणास्रोत होते हैं।

2. शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास

शिक्षण एक महान व्यवसाय है, जो अनेक कारणों से अन्य व्यवसायों से भिन्न है। शिक्षक मानव विकास की प्रक्रिया में संलग्न सबसे बड़ा पेशेवर समूह है, जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित करता है। किसी भी व्यवसाय में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण आवश्यक माना जाता है। अतः शिक्षकों के कार्यों में सुधार एवं दक्षता के लिए प्रभावी व्यावसायिक प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक है।

एक शिक्षक के व्यावसायिक प्रशिक्षण में विषय का गहन ज्ञान, शिक्षा-शास्त्र की समझ तथा प्रभावी शिक्षण विधियों का समावेश होता है। व्यावसायिक विकास के प्रति शिक्षकों का दृष्टिकोण अलग-अलग हो सकता है। कुछ शिक्षक निरंतर सीखने एवं अपने ज्ञान को अद्यतन रखने के लिए सक्रिय रहते हैं, जबकि कुछ शिक्षक ऐसी गतिविधियों में भाग लेने से बचते हैं।

रॉड्रिग्ज एवं मैके के अनुसार, अनुभवी शिक्षकों को व्यावसायिक विकास के लिए संस्थागत सहयोग नए शिक्षकों की तुलना में कम प्राप्त होता है, जिससे उनके व्यावसायिक विकास के प्रति दृष्टिकोण प्रभावित हो सकता है।

वर्तमान समय में तीव्र आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन शिक्षा सहित प्रत्येक सार्वजनिक क्षेत्र को प्रभावित कर रहे हैं। विश्वभर की शिक्षा प्रणालियों में व्यापक परिवर्तन एवं नवाचार देखने को मिल रहे हैं।

गुस्की (2002) के अनुसार–

"शिक्षा में सुधार के लगभग प्रत्येक आधुनिक प्रस्ताव का केंद्रीय घटक उच्च गुणवत्ता वाला व्यावसायिक विकास है।"

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास ने व्यावसायिक विकास की अवधारणा को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। आज के विद्यार्थी अधिक जागरूक एवं तकनीकी रूप से सक्षम हैं। इंटरनेट के माध्यम से वे किसी भी विषय की जानकारी आसानी से प्राप्त कर लेते हैं, जिससे शिक्षक की भूमिका केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि उसे मार्गदर्शक एवं प्रेरक की भूमिका निभानी पड़ती है।

डे (1999) के अनुसार–

शिक्षक का विकास उसके व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक जीवन के साथ-साथ उस विद्यालय एवं समुदाय से भी जुड़ा होता है जहाँ वह कार्य करता है।

व्यावसायिकता

व्यावसायिकता का अर्थ किसी व्यवसाय को उच्च नैतिक मूल्यों, दक्षता एवं उत्तरदायित्व के साथ संपादित करना है। जिस व्यक्ति के पास आवश्यक ज्ञान, कौशल एवं सकारात्मक दृष्टिकोण होता है तथा वह उनका प्रभावी उपयोग करता है, वही वास्तविक अर्थों में पेशेवर कहलाता है।

व्यावसायिकता केवल ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें निम्न गुण भी सम्मिलित होते हैं–

- समर्पण
- ईमानदारी
- उत्तरदायित्व
- अनुशासन
- समयपालन
- प्रभावी व्यवहार
- कार्य के प्रति निष्ठा

अतः व्यावसायिकता व्यक्ति के कार्य करने के तरीके, व्यवहार, भाषा, व्यक्तित्व एवं कार्य संस्कृति का समग्र स्वरूप है।

शिक्षकों के लिए व्यावसायिकता का विकास

शिक्षक की भूमिका शिक्षा की गुणवत्ता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। शिक्षक की व्यावसायिकता विद्यार्थियों के अधिगम, विद्यालय के वातावरण तथा समाज के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है।

शिक्षक व्यावसायिकता के तीन प्रमुख आयाम हैं–

1. **क्षमता (Competence)**
2. **प्रदर्शन (Performance)**
3. **आचरण (Conduct)**

इन तीनों के संतुलित विकास से शिक्षण की प्रभावशीलता में वृद्धि होती है।

योग्यता के अंतर्गत मुख्य रूप से तीन बातें आती हैं–

- उचित प्रशिक्षण
- विषय का गहन ज्ञान
- प्रभावी शिक्षा-शास्त्र

उचित प्रशिक्षण शिक्षक को विभिन्न प्रकार की कक्षा-स्थितियों का सामना करने के लिए तैयार करता है। भाषा, संस्कृति, सामाजिक एवं आर्थिक विविधताओं के बीच भी शिक्षक प्रभावी ढंग से शिक्षण कार्य कर सकता है।

विषय का गहन ज्ञान शिक्षक को आत्मविश्वास प्रदान करता है तथा वह विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षण सामग्री एवं शिक्षण तकनीकों का चयन कर सकता है।

एक पेशेवर शिक्षक निरंतर नई शिक्षण विधियों का अध्ययन करता है तथा अपने अनुभवों के आधार पर सर्वोत्तम शिक्षण पद्धति अपनाने का प्रयास करता है।

आचरण भी व्यावसायिकता का अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष है। शिक्षक का व्यवहार, व्यक्तित्व, भाषा, अनुशासन एवं नैतिकता विद्यार्थियों तथा समाज के लिए प्रेरणास्रोत होते हैं।

3. व्यावसायिक विकास की आवश्यकता

I. नए ज्ञान का अनुकूलन

शिक्षा एक निरंतर विकसित होने वाला क्षेत्र है। प्रत्येक दिन नए शोध, नई तकनीकें तथा नवीन शिक्षण पद्धतियाँ विकसित हो रही हैं। इसलिए शिक्षकों के लिए आवश्यक है कि वे समय-समय पर अपने ज्ञान को अद्यतन करें तथा नई जानकारियों को अपने शिक्षण में सम्मिलित करें। व्यावसायिक विकास शिक्षकों को नवीन ज्ञान एवं शोध से परिचित कराता है, जिससे वे विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकें।

II. कौशल विकास

वर्तमान समय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का युग है। शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया में निरंतर नए कौशलों का विकास हो रहा है। शिक्षकों में विभिन्न प्रकार के शैक्षिक एवं तकनीकी कौशलों का विकास करने के लिए व्यावसायिक विकास कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं।

इन कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षक हार्ड स्किल्स एवं सॉफ्ट स्किल्स दोनों का विकास कर सकते हैं।

हार्ड स्किल्स में शामिल हैं–

शिक्षण विधियाँ

पाठ योजना निर्माण

मूल्यांकन तकनीक

i. ICT का उपयोग
ii. विषयगत दक्षता
iii. सॉफ्ट स्किल्स में शामिल हैं–
iv. संचार कौशल
v. नेतृत्व क्षमता
vi. टीम वर्क
vii. समस्या समाधान
viii. समय प्रबंधन
ix. निर्णय लेने की क्षमता

III. शिक्षण निर्देशों में सुधार

व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षक नवीन शिक्षण विधियों, रणनीतियों एवं नवाचारों को सीखते हैं तथा उन्हें कक्षा में लागू करते हैं। इससे शिक्षण अधिक प्रभावी, रोचक एवं विद्यार्थी-केंद्रित बनता है।

IV. शिक्षण-अधिगम सामग्री का विकास

शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षण सामग्री का उपयोग करते हैं। अनेक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि उपयुक्त शिक्षण सामग्री विद्यार्थियों की उपलब्धि में सकारात्मक वृद्धि करती है।

इसलिए शिक्षकों को समय-समय पर आयोजित–

सेमिनार

कार्यशालाओं

सम्मेलनों

प्रशिक्षण कार्यक्रमों

में भाग लेना चाहिए, ताकि वे नवीन शिक्षण सामग्री एवं नवाचारों से परिचित हो सकें।

V. करियर में प्रगति

व्यावसायिक विकास शिक्षक के करियर विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। नए ज्ञान एवं कौशल शिक्षकों को अधिक सक्षम बनाते हैं तथा उन्हें उच्च पदों एवं नई जिम्मेदारियों के लिए तैयार करते हैं।

व्यावसायिक विकास के प्रमुख कार्यक्रम

1. कार्यशाला (Workshop)

कार्यशाला एक उद्देश्यपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम होता है, जिसमें प्रतिभागियों को किसी विशिष्ट विषय पर व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जा

ता है। इसमें समूह चर्चा, गतिविधियाँ, अभ्यास एवं अनुभवों का आदान-प्रदान किया जाता है। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि प्रतिभागियों में आवश्यक कौशलों का विकास करना होता है।

2. सेमिनार एवं सम्मेलन

सेमिनार एवं सम्मेलन व्यावसायिक विकास के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। इनमें किसी विशिष्ट विषय पर विशेषज्ञों द्वारा विचार प्रस्तुत किए जाते हैं तथा प्रतिभागियों के बीच चर्चा एवं विचार-विमर्श कराया जाता है।

इनका आयोजन विभिन्न स्तरों पर किया जाता है–

संस्थागत स्तर

राज्य स्तर

राष्ट्रीय स्तर

अंतरराष्ट्रीय स्तर

इन कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षक नवीन शोध, नवाचार एवं समकालीन शैक्षिक प्रवृत्तियों से परिचित होते हैं।

4. शिक्षक प्रशिक्षण और व्यावसायिक विकास

व्यावसायिक विकास के अन्य कार्यक्रम

i. विद्यालय आधारित कार्यक्रम

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास हेतु विद्यालय स्तर पर भी विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। शिक्षकों को शैक्षिक मेलों, प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों एवं विषय-विशेष गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। ऐसे कार्यक्रम शिक्षकों के ज्ञान, अनुभव तथा शिक्षण कौशल में वृद्धि करते हैं।

ii. प्रयोग एवं क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research)

शिक्षक विभिन्न प्रकार के प्रयोगों एवं क्रियात्मक अनुसंधानों के माध्यम से विद्यालय तथा कक्षा की वास्तविक समस्याओं का समाधान खोज सकते हैं। इससे शिक्षण रणनीतियों, शिक्षण विधियों तथा शिक्षण सामग्री में नवाचार करने की प्रेरणा मिलती है।

क्रियात्मक अनुसंधान शिक्षक को जमीनी स्तर पर समस्याओं को समझने तथा उनके व्यावहारिक समाधान विकसित करने में सहायता करता है।

व्यावसायिक विकास के प्रमुख पहलू

iii. शिक्षक की पहचान (Teacher Identity)

एक शिक्षक की पहचान उसके व्यक्तिगत अनुभवों, व्यक्तित्व, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों तथा व्यावसायिक अनुभवों से निर्मित होती है।

शिक्षक शिक्षा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को विभिन्न परिस्थितियों में उपयुक्त शिक्षण दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता करते हैं। शिक्षक की पहचान केवल ज्ञान प्राप्त करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह इस बात को भी निर्धारित करती है कि वह स्वयं को एक शिक्षक के रूप में किस प्रकार देखता है तथा अपनी भूमिका का निर्वहन कैसे करता है।

iv. शिक्षक शिक्षा में प्रसंग (Context)

अधिकांश शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम विश्वविद्यालयों अथवा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में आयोजित किए जाते हैं। इन संस्थानों का वातावरण शिक्षकों के सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

कक्षा आधारित शिक्षण, विद्यालयीय अनुभव तथा शिक्षण-अभ्यास (Teaching Practice) के माध्यम से शिक्षक वास्तविक परिस्थितियों से परिचित होते हैं। अनुभवी शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं विद्यालयी वातावरण के साथ निरंतर संवाद से उनके व्यावसायिक विकास को गति मिलती है।

फिर भी अनेक बार सैद्धांतिक अध्ययन एवं विद्यालय आधारित व्यावहारिक अनुभवों के बीच अंतर देखने को मिलता है, जिसे कम करना आवश्यक है।

v. शिक्षक संज्ञान (Teacher Cognition)

शिक्षक संज्ञान का संबंध शिक्षक की सोच, विश्वास, निर्णय क्षमता एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से है। यह केवल ज्ञान तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह भी निर्धारित करता है कि शिक्षक कक्षा में किस प्रकार निर्णय लेता है तथा विद्यार्थियों के अधिगम को किस प्रकार प्रभावित करता है।

शिक्षा के क्षेत्र में यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि शिक्षक सक्रिय निर्णयकर्ता होते हैं तथा कक्षा की संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास की चुनौतियाँ

ii. संसाधनों की कमी

व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के सफल संचालन के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। विशेषज्ञों की नियुक्ति, आधुनिक तकनीकों का उपयोग तथा गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम पर्याप्त आर्थिक सहायता के बिना संभव नहीं हैं।

ii. विशेषज्ञों की कमी

सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन हेतु योग्य एवं अनुभवी विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। पर्याप्त विशेषज्ञ उपलब्ध न होने के कारण प्रशिक्षण कार्यक्रम अपेक्षित गुणवत्ता प्राप्त नहीं कर पाते।

iii. भाषा संबंधी बाधाएँ

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाषा एक प्रमुख बाधा बन जाती है। विभिन्न राज्यों एवं क्षेत्रों के शिक्षक अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं, जिससे प्रभावी संवाद में कठिनाई उत्पन्न होती है।

iv. समय का अभाव

शिक्षकों के पास नियमित शिक्षण कार्य, प्रशासनिक दायित्व एवं अन्य विद्यालयीय गतिविधियों के कारण प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए पर्याप्त समय नहीं होता। कई बार विद्यालयों में शिक्षकों की कमी के कारण भी उन्हें प्रशिक्षण हेतु भेजना कठिन हो जाता है।

v. रुचि की कमी

कुछ वरिष्ठ शिक्षक, विशेषकर सेवानिवृत्ति के निकट पहुँच चुके शिक्षक, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, शोध लेखन तथा व्यावसायिक विकास गतिविधियों में अपेक्षाकृत कम रुचि लेते हैं। इससे नवाचारों को अपनाने की गति धीमी हो जाती है।

vi. प्रोत्साहन की कमी

व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु शिक्षकों को पर्याप्त प्रोत्साहन, आर्थिक सहायता एवं संस्थागत सहयोग मिलना आवश्यक है। यदि उचित प्रोत्साहन उपलब्ध न हो तो शिक्षक ऐसे कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी नहीं कर पाते।

5. व्यावसायिकता और व्यावसायिक विकास

व्यावसायिकता तथा व्यावसायिक विकास एक-दूसरे के पूरक हैं। व्यावसायिक विकास एक सतत अधिगम प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से शिक्षक अपने ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण तथा कार्यकुशलता का निरंतर विकास करते हैं। यह प्रक्रिया समय, स्थान एवं अनुभवों के साथ निरंतर आगे बढ़ती रहती है।

शिक्षकों के व्यावसायिक विकास का वास्तविक महत्व उनके मूल्यों, प्रतिबद्धता, विशेषज्ञता तथा नेतृत्व क्षमता में निहित है। किसी भी पेशे की गुणवत्ता उसके सदस्यों के ज्ञान, दक्षता एवं नैतिक उत्तरदायित्व पर निर्भर करती है। इसलिए शिक्षण व्यवसाय में भी विशेषज्ञता, समर्पण एवं नेतृत्व जैसे गुणों का विकास आवश्यक है।

विद्यालयों को ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता होती है जो–

- विषय के विशेषज्ञ हों।
- अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध हों।
- नेतृत्व क्षमता रखते हों।
- नवीन शिक्षण तकनीकों को अपनाने के लिए तत्पर हों।
- विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के प्रति संवेदनशील हों।

शिक्षक-तैयारी कार्यक्रमों तथा व्यावसायिक मानकों में सुधार तभी प्रभावी सिद्ध होगा, जब शिक्षण को एक आकर्षक एवं सम्मानजनक करियर के रूप में विकसित किया जाएगा।

विद्यालयों में प्रशासकों, शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं अभिभावकों के बीच सहयोगात्मक एवं सहभागी वातावरण का निर्माण आवश्यक है। ऐसा वातावरण शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को गति देता है तथा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाता है।

व्यावसायिक विकास की प्रक्रिया में शिक्षक की व्यक्तिगत प्रेरणा अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यदि शिक्षक स्वयं सीखने, नवाचार अपनाने एवं आत्मविकास के प्रति प्रेरित हो, तो वह शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

6. निष्कर्ष

शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर परिवर्तन हो रहे हैं। इन परिवर्तनों के अनुरूप शिक्षकों का व्यावसायिक विकास समय की आवश्यकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तभी संभव है, जब शिक्षक नवीन ज्ञान, वैज्ञानिक अनुसंधानों तथा आधुनिक शिक्षण तकनीकों से निरंतर परिचित रहें।

शिक्षकों को सेवा-पूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नियमित रूप से भाग लेना चाहिए, जिससे वे अपने ज्ञान एवं कौशल का विकास कर सकें। सरकार, विश्वविद्यालयों तथा शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों का दायित्व है कि वे प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों का आयोजन करें।

व्यावसायिक विकास केवल शिक्षक के व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह विद्यालय, समाज तथा राष्ट्र के समग्र विकास का आधार भी है। इसलिए प्रत्येक शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह आजीवन सीखने की भावना बनाए रखते हुए स्वयं को निरंतर विकसित करता रहे।

7. संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. इव्स, एल. (2008). **व्यावसायिकता, व्यावसायिकता और शिक्षा पेशेवरों का विकास।** *British Journal of Educational Studies*, 56(1), 20-38.
2. बोर्ग, एस. (2006). **शिक्षक अनुभूति और भाषा शिक्षा।** लंदन।
3. डे, सी. (1999). **विकासशील शिक्षक : आजीवन सीखने की चुनौतियाँ।** लंदन : फाल्मर प्रेस।
4. गुस्की, टी. आर. (2002). **व्यावसायिक विकास और शिक्षक परिवर्तन।** *Teaching and Teacher Education: Theory and Practice*.
5. शर्मा, आर. ए. **अध्यापक शिक्षा एवं प्रशिक्षण तकनीकी।** मेरठ : आर. एल. बुक डिपो।
6. अस्थाना, बिपिन. (2013). **मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन।** आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
7. पाण्डा, यू. एन. (1988). **School Management.** नई दिल्ली : आशीष हाउस पब्लिकेशन।
8. शर्मा, आर. ए. **शिक्षा प्रबंध।** मेरठ : आर. एल. बुक डिपो।
9. भटनागर, सुरेश. (2010). **शिक्षा मनोविज्ञान।** मेरठ : आर. एल. बुक डिपो।
10. गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, अल्का. (2008). **उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान।** इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।